RNI : UPHIN/2001/05232 ISSN : 0972-4737 SSP/LW/NP/61-2017-19
नवम्बर, 2017/Nov., 2017 वर्ष–14 अंक–08 (170)/Year-14 Vol-08 (170) प्रकाषन तिथि 10 नवम्बर 2017 मूल्य 30/–

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार

तीर्थंकर नेमिनाथ की शासन यक्षी अम्बिका, लगभग 10वीं शती ईस्वी
(विवरण पृष्ठ 28 पर....)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा प्रकाशन

भगवान अरनाथ संग्रहालय नवागढ़ जिला ललितपुर उ.प्र. में सुरक्षित तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमाएँ

❑ नरेश कुमार पाठक

तीर्थंकर आदिनाथ को जैन सम्प्रदाय का प्रथम तीर्थंकर माना जाता है, किन्तु जैन पुराणों एवं शिल्पशास्त्र से संबंधित ग्रन्थों में प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से आदिनाथ के विषय में बहुत कम वर्णन मिलता है, जो कुछ भी विवरण मिलता है, वह उनके लांछनों आदि से संबंधित होता है। 'प्रवचन सारोद्धार' से हमें ज्ञात होता है, कि आदिनाथ का लांछन वृषभ है।[1] जबकि कुछ सन्दर्भ ऐसे भी हैं, जिनमें इनका लांछन 'धर्मचक्र' बतलाया गया है।[2] अभिज्ञान चिन्तामणि, तिलोयपण्णत्ति, निर्वाण कलिका तथा प्रतिष्ठासारोद्धार आदि ग्रन्थों में आदिनाथ से संबंधित जो जानकारी मिलती है, तद्नुसार उनकी माता का नाम मरुदेवी और पिता का नाम नाभि था। उनका जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था और वहीं पर तपस्या करते हुए न्यग्रोधवृक्ष के नीचे उहोंने ''केवलज्ञान'' प्राप्त किया था। जैन ग्रन्थों के अनुसार आदिनाथ की निर्वाण भूमि कैलाश पर्वत अथवा अष्टापद है। शासन देवता के रूप में उनके साथ गोमुखी यक्ष और यक्षी चक्रेश्वरी को शिल्पांकित किया जाता है। भरत और बाहुबलि को उनका मुख्य आराधक माना जाता है, दिगम्बरों के 'आदिपुराण' में आदिनाथ के विषय में जानकारी उपलब्ध होती है।[3] भगवान् अरनाथ संग्रहालय नवागढ़ जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश में नवागढ़ (नावई) जिला ललितपुर[4] एवं ककरवाहा जिला टीकमगढ़ मध्य प्रदेश से प्राप्त तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमाएँ सुरक्षित हैं, इन प्रतिमाओं की प्राप्ति संबंधी जानकारी एवं प्रतिमाओं के छायाचित्र मुझे दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के निर्देशक डॉ. जयकुमार जैन 'निशान्त' जी द्वारा उपलब्ध कराये गये इसी के आधार पर यह आलेख तैयार किया गया है जिसका विवरण प्रस्तुत आलेख में इस प्रकार है-

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नावई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे टीला के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प ककरवाहा एवं उनके साथियों को मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर/यू.पी.२७७१) तीर्थंकर आदिनाथ का कमर से नीचे का भाग है, तीर्थंकर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं, तीर्थंकर के खण्डित पैर एवं एक हाथ आंशिक रूप से द्रष्टव्य है। पैरों के पास नीचे दोनों ओर सेवक खण्डित अवस्था में अंकित हैं। आसन पर तीर्थंकर आदिनाथ का ध्वज लांछन वृषभ (बैल) बना है। दोनों पार्श्व में विपरीत दिशा में मुख किये सिंह हैं। पादपीठ के दायें पार्श्व में गोमुख यक्ष जिनका मुख गोमुख एवं सींग बने हैं। बायीं ओर गरुड़ पर आरूढ़ यक्षी चक्रेश्वरी बैठी है। दोनों पारम्परिक आभूषण एवं आयुध धारण किये हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित १८X२३X११ सेमी. आकार

की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र १)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नावई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पहले टीले के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू.पी.२७८०) तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा का अधोभाग प्राप्त हुआ है, जिसमें कमर से नीचे का भाग है, पादपीठ की चटाई पर तीर्थंकर आदिनाथ का ध्वज लांछन वृषभ का अंकन है, नीचे चक्र दोनों ओर विपरीत दिशा में मुख किये सिंहों का अंकन है। नीचे दोनों ओर हाथ जोड़े सेवक बैठे हैं। पादपीठ के पार्श्व में दायें ओर गोमुख यक्ष सव्य ललितासन में बैठे हैं, जो हाथों में क्रमशः वरदमुद्रा, परशु, फल एवं अक्षमाला लिये है। यह गोमुखी है, हार धारण किये है। बायीं ओर यक्षी चक्रेश्वरी वाहन गरुड़ पर सव्य

चित्र-२

ललितासन में बैठी है, ऊपरी दोनों हाथों में चक्र लिये है। बायें नीचे का हाथ वरद मुद्रा में एवं बायां नीचे के हाथ में मातुलिंग लिये है। यक्षी मुकुट, कुण्डल, हार, केयूर, बलय, धारण किये है। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित ३२x४२x२६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र २)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के ऊपरी भाग के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उन्हें साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी. आर./यू.पी.२७८१) तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा का अधोभाग है जिसमें कमर से नीचे का भाग है, तीर्थंकर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। पादपीठ पर मध्य आसन पर तीर्थंकर आदिनाथ का ध्वज लांछन वृषभ का अंकन है जिसके नीचे दोनों ओर अंजली हस्त मुद्रा में सेवकगण बैठे हैं। दोनों ओर विपरीत दिशा में मुख किये सिंह अंकित हैं। पादपीठ पर दायें पार्श्व में गोमुख यक्ष की प्रतिमा प्रतीत होती है। बलुआ पत्थर पर निर्मित २८x३२x८ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी

की प्रतीत होती है। (चित्र ३)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललिपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीला के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू.पी. २७८६) तीर्थंकर आदिनाथ का अधोभाग प्राप्त हुआ है, जिसमें कमर से नीचे का भाग है। तीर्थंकर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं पादपीठ पर विपरीत दिशा में मुख किये सिंह अंकित रहे होंगे जो काफी खण्डित हो चुके हैं। पादपीठ के ऊपरी भाग में दोनों ओर एक-एक अंजली मुद्रा में सेवक बैठे हैं। दायीं ओर का सेवक भग्न है। बायीं ओर का सेवक कुण्डल, हार एवं अधोवस्त्र धारण किये है। पादपीठ पर दायीं ओर गोमुख यक्ष सव्य ललितासन में बैठा है। चेहरा गोमुख शरीर मानव का है। हाथों में क्रमशः अक्षमाला परशु, फल एवं वरद मुद्रा में है। बायीं ओर यक्षी चक्रेश्वरी वाहन गरुड़ पर सव्यललितासन में बैठी है। यक्षी की दोनों ऊपरी भुजाओं में चक्र है, दायीं नीचे की भुजा वरद मुद्रा में एवं बायीं नीचे की भुजा में मातुलिंग है। यक्षी मुकुट, कुण्डल, हार पहने है, बलुआ पत्थर पर निर्मित २६x३४x१३ सेमी. आकार की

प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ४)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पूर्व टीले के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू. पी.२७८७) तीर्थंकर आदिनाथ का अधोभाग प्राप्त हुआ जिसमें कमर से नीचे का भाग है। तीर्थंकर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हैं। पादपीठ के मध्य आसन पर आदिनाथ का ध्वज लांछन वृषभ अंकित है। दोनों ओर विपरीत दिशा में मुख किये सिंह बैठे हैं। पादपीठ के दायें पार्श्व में गोमुख यक्ष सव्य ललितासन में बैठा है, जिनका दायाँ भाग भग्न है। बायीं ओर यक्षी चक्रेश्वरी सव्य ललितासन में बैठी है। जिनका बायाँ भाग भग्न है। बलुआ पत्थर पर निर्मित २०x३०x१६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं

शती ईस्वी की है। (चित्र ५)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई

जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पहले टीले के बाहरी भाग से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी. आर./यू.पी.२७९२) दो स्तंभ युक्त रथिका पर ऊँचे आसन पर पद्मासन की ध्यानस्थ मुद्रा में तीर्थंकर आदिनाथ बैठे हैं। सिर पर कुन्तलित केश जो कंधे तक फैले हुए हैं। लम्बे कर्णचाप व वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। केश कंधे तक फैले होने के कारण इस प्रतिमा को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा माना गया है। लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित ४८x५०x२० सेमी. आकार की

प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ६)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरा टीला से ६ अप्रैल १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू.पी.२८१२) तीर्थंकर आदिनाथ कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़े हैं। सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन है। तीर्थंकर के कंधे पर केश फैले हुये हैं, इस आधार पर इस प्रतिमा को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा कहा जा सकता है, हाथ भग्न हैं, पैर नीचे से टूटे हुये हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित १०६x४८x२५ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ७)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पश्चात् जमीन से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को ६ अप्रैल १९५९ को प्राप्त हुई थी (एल.पी.आर./यू. पी.२८२९) कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर आदिनाथ खड़े हैं। हाथ आंशिक रूप से भग्न है, सिर पर कुन्तलित केश, लम्बे कर्णचाप

एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन हे, केश कन्धे तक फैले हुये हैं, इस आधार पर इस प्रतिमा को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा माना गया है, वितान में दोनों ओर उड़ते हुये मालाधारी विद्याधर अंकित हैं। पार्श्व में पादपीठ पर दोनों ओर द्विभंग मुद्रा में चंवरधारी खड़े हुये हैं, जो एक हाथ में चंवर, दूसरा हाथ पैर की जंघा पर रखे हैं। दोनों के चेहरे भग्न हैं, बलुआ पत्थर पर निर्मित २१७x७६x३३ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ८)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पश्चात् जमीन से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को ६ अप्रैल १९५९ को प्राप्त हुई है। (एल.पी.आर./यू.पी.२८१९) दो स्तंभों के मध्य तीर्थंकर आदिनाथ कायोत्सर्ग की ध्यानस्थ मुद्रा में खड़े हैं। सिर पर कुन्तलित केश राशि, लम्बे कर्णचाप हैं, तीर्थंकर के कंधों पर केश फैले हुये हैं, इस आधार पर इस प्रतिमा को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा माना गया है। तीर्थंकर के पैर घुटनों से नीचे टूटे हुये हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित ६४x३८x२६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ९)

आदिनाथ- तीर्थंकर आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पहले टीले के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी. आर./यू.पी.२७७५) तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ी है। तीर्थंकर का सिर भग्न है, परन्तु केश कंधे पर फैले हैं। इस कारण यह प्रतिमा तीर्थंकर आदिनाथ की है। दायां हाथ टूटा है,

बांया हाथ का पन्जा टूटा है। वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन है, पैर घुटने से नीचे भग्न हैं। बलुआ पत्थर पर निर्मित १३x१२.५x६ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। (चित्र १०)

आदिनाथ- तीर्थंकर

आदिनाथ की यह प्रतिमा नवागढ़ नाबई जिला ललितपुर उत्तर प्रदेश के भोंयरे के टीले के खनन के पहले टीले के बाहरी हिस्से से पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' ककरवाहा एवं उनके साथियों को २६ मार्च १९५९ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू.पी.२७६८) यह तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा का ऊर्ध्वभाग है, तीर्थंकर का सिर व हाथ टूटे हैं, कंधे पर केश फैले हैं, इस आधार पर इस प्रतिमा को तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा माना है। वक्ष पर श्रीवत्स चिह्न का अंकन है। बलुआ पत्थर पर निर्मित १३.५X१९.५X८.५

सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग ११वीं शती ईस्वी की है। (चित्र ११)

आदिनाथ- यह तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ककरवाहा जिला टीकमगढ़ मध्य प्रदेश से डॉ. सुन्दरलाल जैन, सिंघई हीरालाल एवं ब्र. जय कुमार निशांत के प्रयासों से ९ जून २०१३ को प्राप्त हुई थी। (एल.पी.आर./यू.

पी.२८६६) तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा का ऊर्ध्व भाग है, जिसका चेहरा टूटा हुआ है, लम्बे कर्णचाप, केश कंधे पर फैले हुये होने के कारण इस प्रतिमा को प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा माना जा सकता है। काले ग्रेनाइट पत्थर पर निर्मित १९X२७X१४ सेमी. आकार की प्रतिमा लगभग १२वीं शती ईस्वी की है। (चित्र १२)

उपरोक्त भगवान् अरनाथ संग्रहालय नवागढ़ में सुरक्षित आदिनाथ प्रतिमाएँ चन्देल कालीन जैन कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं एवं यह स्थान बुन्देलखण्ड की चन्देल कालीन मूर्तिकला का महत्त्वपूर्ण कला केन्द्र होने के स्पष्ट प्रमाण हैं।

सन्दर्भ सूची

१. वसहगम तुरय वानर कुंचो कमल च सहिथयो चंदा
२. भट्टाचार्य बी.सी. जैन आइकनोग्राफी लाहौर १९३९ पृ.४६ पाटदीप-२ तक्षशिलायां बाहुबलिया कारिते भगवते ऋषभदेवस्य धर्म प्रकाश के चक्रे च आव
३. इन्दौर संग्रहालय में सुरक्षित जैन एवं बौद्ध प्रतिमाएँ एवं विविध कलाकृतियाँ भोपाल १९९१ पृ.२०
४. जैन अनुपम अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मंदिर निर्देशिका इन्दौर २००८ पृ.६१४ क्रमांक ३२

-२४ रामानुजनगर, रामवाटिका के पीछे,
न्यू गोविन्दपुरी के सामने,
सिटी सेन्टर, ग्वालियर (म.प्र.)